38E16T

पाठ 15

धूप

कण	पर्वत	आँगन	पंछी	पत्ते	पंख

बीती रात हुआ उजियारा
घर–आँगन में उतरी धूप।
कण–कण में, पत्ते–पत्ते पर
हँसती–गाती बिखरी धूप।
पर्वत की चोटी पर उछली
झरनों के सँग खेली धूप।
सागर की लहरों पर नाची
सबकी बनी सहेली धूप।

पंछी के पंखों पर चमकी
फूलों पर लहराई धूप।
धरती के कोने–कोने तक
देने लगी दिखाई धूप।

शिक्षण संकेत :– शिक्षक कविता का वाचन सस्वर, उचित यति–गति, लय तथा हाव–भाव के साथ करें और बच्चों से दुहराने को कहें। सूरज के साथ प्राकृतिक दृश्यों वाले चित्र का उपयोग कर पाठ को पढ़ाएँ। कठिन शब्दों को पूछकर बच्चों से ही उनके अर्थ निकलवाने का प्रयास करें। यथा अनुसार विलोम शब्द, वाक्य प्रयोग इत्यादि द्वारा उनकी सहायता भी करें। पाठ के अनुकरण वाचन की आवृति 4–5 बार हो। शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

बीती = समाप्त हुई। पंछी = चिड़िया। सहेली = सखी, मित्र।
पर्वत = पहाड़। कण = बहुत छोटा टुकड़ा

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ –

पंछी, सहेली, पर्वत

2. इन प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में बताओ –

क. रात बीतने पर क्या हुआ ?

ख. पर्वत की चोटी पर क्या उछली ?

ग. पंछी के पंख कैसे चमके ?

घ. कौन सबकी सहेली बन गई है ?

3. कविता की पंक्तियों को पूरा करो।

क. बीती रात हुआ ——————————————

ख. झरनों के संग ——————————————

ग. —————————— की लहरों पर नाची।

घ. धरती के कोने–कोने तक ——————————————

4. पाठ में आए जोड़े वाले शब्द छाँटकर लिखो, जैसे– घर–आँगन

—————————— ——————————

—————————— ——————————

5. उल्टे अर्थ वाले शब्दों को ध्यान से पढ़ो।

सुबह	–	शाम	उतरी	–	चढ़ी
नई	–	पुरानी	आई	–	गई
धूप	–	छाँव	हँसना	–	रोना

6. का, की, के, को मिलाकर शब्द बनाओ और पढ़ो।

	का	की	के	को
उस	उसका	उसकी	——————	——————
किस	——————	——————	——————	——————
सब	——————	——————	——————	——————

गतिविधि :–

1. सूरज, चिड़िया और फूल के चित्र बनाओ।
2. किसी प्राकृतिक दृश्य का चित्र बनाकर अपने पोर्टफोलियो में लगाओ।

38MW8G